अंक – नौ
अप्रैल 2017 – जुलाई 2017

परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्षशिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

इस बार चहकने की ललक अंक–9 में मेरे बाल लेखकों ने मेरे बारे में अच्छा लिखा है इससे पता चलता है कि मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखकों में काफी बदलाव हुआ है। और मैं आशा करता हूँ, कि ये भी ऐसा ही अच्छा लिखेंगे। ये परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है जिसमें सभी बच्चे अपनी–अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते है।

आपका साथी मैं
चहकने की ललक

अपनी बात

बहुत दिन पहले मैं एक बगीचा में आम तोड़ने जा रही थी वह समय शाम का था। उसी बीच मुझे किसी आदमी को आते देखी फिर कुछ देर बाद वह गायब हो गया और वह एक औरत बन गया और रोने लगा तो मैं उसको टोक दी तो मुझे भूत पकड़ लिया और मैं चिल्लाकर रोने लगी। और वहा बेहोश होकर गिर गई। उसी समय वहा कुछ लोग आ गए और मुझे उठाकर मेरे घर ले गये और मैं वहां जाकर भूत खेलने लगी सबको बोली की कौन लड़ेगा मुझसे। सभी घर के लोग परेशान हो गए और मुझे दिखाये ओझा से।

सत्येन्द्र कुमार, कक्षा 6 वां, भरौली

आप बीती

एक बार मैं आम का पेड़ लगाई उसमें मैंने पानी डाला थोड़े दिनों में वह पेड़ बड़ा हो गया फिर मैं देखने गई मुझे पेड़ को देखकर बहुत खुशी हुआ। और मैं खुशी से घर में सभी को बताने लगी की मेरा पेड़ लग गया है वह पक्का फल देगा तब घर के भी लोगों को काफी खुशी हुआ की मैं इतनी छोटी होकर पेड़ लगाई और वो लग गया। तब से मेरे घर के लोग मुझे ही पेड़ लगाने के लिए देते हैं।

सुधा कुमारी, वर्ग 6 वां, बडहुलिया

धान की बुआई

कहानी

एक समय की बात है जब मैं 8 साल की थी तो मेरे पापा धान का बिआ उखाड़ रहे थे। तो मैं उनके साथ खड़ी थी उसी समय मुझे निंद लगने लगा तभी मेरे पापा मुझे खेत में ही सुला दिये उसी समय मेरे कान में सांप के बोलने की आवाज सुनाई दी तभी तो मेरा नींद ही खुल गया और मैं रोने लगी और पापा से बोली आप मुझे घर छोड़ दीजिए। तो पापा मुझे घर पर पहुंचाए तब से मुझे अभी तक खेत में जाने का मन नहीं करता है।

रिशु कुमारी यादव, कक्षा 7वां, नारायणपुर

शिवम् कुमार पंडित
कक्षा 8वां, भवराजपुर

गर्मी का मौसम

कहानी

गर्मी का दिन था, बगीचा में एक स्कूल था। स्कूल के पास एक आम का पेड़ था। जब स्कूल से सारे लड़के अपने–अपने घट लौट रहे थे। तो कुछ लड़के आम के पेड़ के पास रूक गए और रूककर आम तोड़ने लगे। सारे लड़के पक्के आम तोड़कर घर लेकर चले गए और वहां पे दो ही लड़के थे। जिनको आम नहीं मिला, वह ईट से आम तोड़ने लगे, जब नहीं टूटा तो लड़के उन्हें चिढ़ाने लगे। दुसरे दिन वह लड़का आया और आम पेड़ पर चढ़ गया और बहुत सारा आम तोड़ा और लेकर घर चला गया।

अनिश कुमार साह, कक्षा 4वां, सीकियाँ

पुस्तकालय

अपनी बात

एक दिन मैं परिवर्तन गई थी, वहां जाकर मैं पुस्तकालय में गई तो पुस्तकालय के अंदर धागा बांधकर किताब को लटकाया गया था तो उस किताब में से मुझे एक कहानी का किताब अच्छा लगा। रूसी और पूसी इस कहानी में एक रूसी नाम की लड़की है जिसकी एक बिल्ली दोस्त है। उसका नाम है पूसी वो लड़की चित्र बना रही थी जिसमें घर का चित्र था तो वह बिल्ली भी गोभी, गाजर, मूली, टमाटर, मटर इन सभी सब्जियों से घर बनाने लगी तो दोनों में झगड़ा हो गया यह कहानी मुझे बहुत ही अच्छा लगा।

गुडिया कुमारी, कक्षा 5वां, धर्मपुर

हमार बोली

गर्मी के छुट्टी में हम गइल रहनी दिल्ली उहवा खुबे घुमनी, ताजमहल, लालकिला, एरोप्लेन देखनी, फिर हम घरे आ गइनी, अपना दोस्त लोग के संगे बैठ के दिल्ली के बारे में सब बात बतवनी त हमार दोस्त कहत रहल लोग की हमनी की अगली बार गर्मी में छुट्टी में दिल्ली घुमे जाएम सन ओकरा बाद हमनी के बगीचा में खेले चल गइनी सन अउरी खुब आम, लिची तुर के खइनी सन फिर घरे आ गईनी।

आतिश कुमार, कक्षा 3, नरेन्द्रपुर

अपनी बात

मैं चाहती हूं कि बड़ा होकर एक अच्छा आदमी बनु और अपनी एक अलग पहचान महानु से बुजुर्गों कि सेवा करू अभी तक मैं बहुत से बुजुर्गों की मदद की हूं। जैसे किसी को सड़क पार कराना, किसी भूखे

गरीब को खाना देना और किसी असहाय से सहारा लेना। इन सभी से मुझे बहुत खुशी महसूस होती है। यही मेरा लक्ष्य है कि मैं बुजुर्गों की सेवा करू और उनका आशिर्वाद पाकर दुनिया में नाम कमाऊं।

खुशबू कुमारी, कक्षा 8 वां, बडहुलिया

गर्मी

लेख

गर्मी की शुरूआत अप्रैल माह से होता है। अप्रैल माह को चईत का महिना भी कहां जाता है, गर्मी के दिनों

में सभी लोग छत पर सोते हैं, अधिक गर्मी होने के कारण लोग बेना पंखा का प्रयोग करते हैं, गर्मी के दिनों में आम खाने को मिलता है, गर्मी के दिनों में सभी लोग सुती कपड़ा पहनते है। गर्मी के दिनों में स्कूल की छुट्टी होती है, तो हमलोग मामा घर जाते हैं। गर्मी के दिनों में कभी–कभी बारिश भी होती है और लीची भी खाने को मिलता है।

नीरज कुमार सिंह, वर्ग 2, नारायणपुर

कविता

बारिश का मौसम

आसमान से बादल आया
बच्चे सब है शोर मचाते
काली–काली कोयल आई
कु–कु करके गीत सुनाई

जब बारिश आ जाती है,
बच्चे उसमें नहाते है,
हर कड़े से आती आवाज
मेढ़क करते टर्र–टर्र–टर्र

जब बारिश बंद हो जाता है।
कोयल अपनी पंख फैलाकर
आसमान में उन जाती है।
सब बच्चे अपने घर चले जाते हैं।

अभय सिंह, कक्षा 8वां, बडहुलिया

कुँ–कुँ करके बोली कोयल,
बागो का रंग हरसे डोले।
भँवरे गुन–गुन गाते,
बगिया में शोर मचाते।

बादल मुड़रे पर है आया,
गरज–गरज कर हमे डराया।
छम–छम करके बरसे पानी,
यह मौसम है गजब सुहानी

सावन अब है कजरी गाई,
हरियाली धरती पे आई।
झुम–झुम कर फसले गाई
खुश हो गये किसान भाई।

प्रियंका कुमारी, (बाल घर किशलय)

आम

कविता

आम फलो का राजा है।
कितना मीठा और ताजा है।

जब आम का दिन आता है।
खाकर सबका मन भर जाता है।
जब आम खत्म हो जाता है
इसे कोई भी न भूल पाता है
सब करते हैं इंतजार इस दिन का
यह दिन कब लवटकर आयेगा।
इस दिन में सबका हाल होता है,
बंदर और छु–छुन्दर जैसा
सब दिन भर बगीचा में घूमते है
डाल पेड़ पर चढ़कर
आम फलो का राजा है।

प्रिंसी कुमारी, कक्षा 5वां, बेलही पश्चिम

हमारे बाल चित्रकार

रूबी कुमारी, कक्षा 7वां, गोंठी

चुटकुला

चिंटु (पिंटु से)– हम छाता लेकर क्यों चलते हैं?
पिंटु– क्योंकि छाता नहीं चल सकता है।

गुडिया कुमारी, कक्षा 5 वां, खेम भटकन

शिक्षक– बताओ दो में से यदि दो घटा दिया जाए तो क्या बचेगा?
छात्र– मैं सवाल नहीं समझ पाया सर
शिक्षक– अगर दो रोटियां है और दोनों तुमने खा लिया तो क्या बचा?
छात्र– सर, सब्जी

संजु– इस समय बहुत गरमी पड़ रही है।
सन्नी– लेकिन सुबह तो बर्फ भी पड़ी थी।
संजु– बर्फ? कहां?
सन्नी– मेरे जिम में

एक डॉक्टर एक युवती का वजन करने के बाद बोला– आपको तुरंत अस्पताल में दाखिल होना चाहिए।
युवती– डॉक्टर साहब आपको घबराने की जरूरत नहीं है। आज मैं मेकअप नहीं की हूं।

जितेश कुमार, कक्षा 4वां, बाबु भटकन

क्रॉफ्ट गतिविधि

क्रॉफ्ट में मैं तार और उन से छाता बनाना सीखा, छाता को बनाने के लिए तार चाहिए उन कैचि पिलास इन सभी चिजों के सहायता से छाता बनाया जाता है। सबसे पहले पतला तार लेंगे उसको पिलास से काट कर छोटा–छोटा टुकड़ा बनायेंगे फिर उस को सभी टुकड़े को उन से बांध देंगे। बांधकर उसको छाता के आकार में मोड़ देंगे। मोड़े हुए तार पर उन को गोल–गोल कर के लपेट देंगे। इस प्रकार छाता बनाया जाता है।

विशाल कुमार, कक्षा 5वां, धर्मपुर

बांध दिए जब पैर हमारे,
तब हमको वह चलने देता
दांत नहीं होते है उसके
काट हमें वह फिर भी लेता।

बिना आवाज के रोता,
बिना पंखों के फड़फड़ाता,
दांत नहीं पर हूं काटता।
मुह नहीं पर बड़बड़ाता

पहेली

निधि कुमारी,
कक्षा 8वां, बेलही पूरब

खुले सेशन

ऐसा कौन–सा महिना है, जो जिस दिन से शुरू होता है, उसी दिन को खत्म होता है?

उदाहरण–
मान लिजिए अगर सोमवार से शुरू होता तो सोमवार को ही खत्म होगा।

राहुल कुमार,
कक्षा–7, बेल्ही पूरब

आने वाला थीम

अंक 9 के लिए

आने वाला थीम
रक्षा बंधन
कृष्ण जन्म अष्टमी
तीज व्रत
जीउतिया व्रत
मुहर्रम
गांधी जयंती
दुर्गा पूजा
दिपावली

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित। सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स